फौलादी इरादे

सुकानी

गुजरात भारत का सबसे उद्योग प्रधान राज्य है।

लेखक के बारे में

सुकानी प्रोफेसर चंद्रशंकर ए बुच का छद्म नाम था। गुजराती में 'सुकानी' का अर्थ है किसी जहाज़ या जल यान का संचालक। एक विद्योचित परिवेष, और संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य में प्राप्त उपाधियों के बावजूद, समुद्र के सम्मोहन से ख़िचे, उन्होंने नौपरिवहन में नौकरी की। स्वाधीनता पूर्व, उन्होंने नाविक अफ़सरों के लिए पहला प्रशिक्षण स्कूल स्थापित किया। जब १९५८ में उनकी मृत्यु हुई, वे ६२ वर्ष के थे।

सुकानी ने अनेक समुद्री कहानियाँ लिखीं हैं, जिनमें से कई उनके अपने जीवन के अनुभवों और सच्ची घटनाओं पर आधारित हैं। उनकी लोकप्रिय लम्बी लघुकथा "धुडकियो बान" गुजराती समुद्री लुटेरों की ज्वार-भाटा सी तूफ़ानी ज़िन्दगी, दुःसाहस, रहस्य और रोमांच से भरपूर है।

फौलादी इरादे

सुकानी

की गुजराती कहानी पर आधारित
कथा द्वारा संक्षिप्त अनुवाद

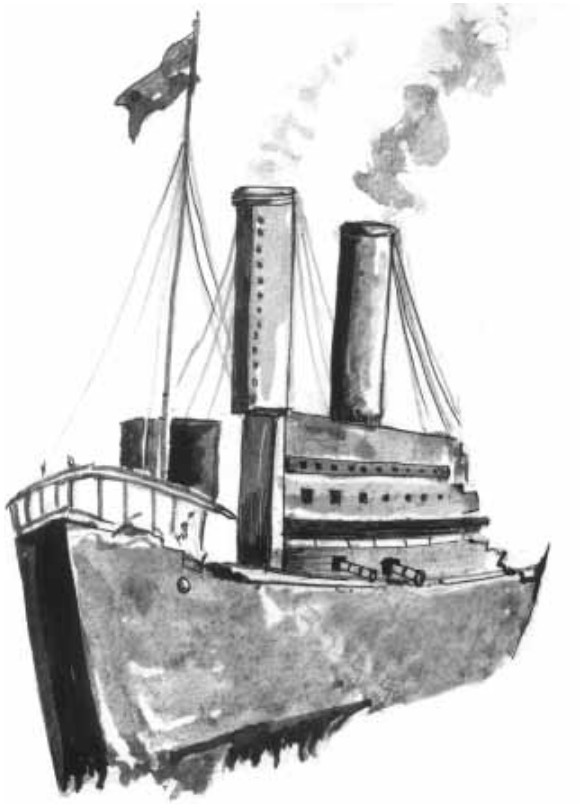

सीरीज़ संपादिकाः गीता धर्मराजन

KATHA

प्रथम हिन्दी संस्करण 2008, दूसरा संस्करण 2010
तीसरा संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89934-07-1
कवर चित्राँकन एवं डिज़ाइनः गरिमा गुप्ता
चित्राँकनः एम डी हुसैन एवं दिलिप कुमार मंडल

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलनेवाली खुशी को बढ़ावा देना।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4182 9998, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org

वर्ष 1942, पश्चिम ऑस्ट्रेलिया। फ्रीमैंटल के बंदरगाह पर धीरे-धीरे सूरज ढल रहा था। नवम्बर का महीना था। दिन भर की गर्मी और चिलचिलाती धूप के बाद जब संध्या की ठंडी परछाइयाँ फैलने लगी, तो मानों पूरे शहर ने चैन की साँस ली।

बंदरगाह में लंगर डाले भाप के कई जहाज़ बड़ी-बड़ी क्रेनों से सामान लाद रहे थे। वे व्यापारी जहाज़ों के जत्थे का हिस्सा थे, जो कल तड़के ही सुदूर देशों की यात्रा के लिए निकल रहे थे। द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था और यह जत्था भी लड़ाकू जहाज़ी बेड़े की देखरेख में यात्रा करनेवाला था। हर जहाज़ पर बेड़ों में उसकी सही जगह दर्शाने वाले झंडे ऊँचे मस्तूलों पर फड़फड़ा रहे थे।

जैसे ही शाम की दो घंटेवाली निगरानी की दूसरी घंटी बजी, बंदरगाह के ऑपरेशन्स की सबसे ऊंची इमारत पर लगी घड़ी ने छह बजाए। इसी इमारत में युद्ध-संबंधी योजनाएँ बनती थीं और फ़ैसले किए जाते थे। इस वक्त यहाँ अमेरिका, इंग्लैंड और अन्य एलाइज़ के लगभग चालीस कप्तान मौजूद थे। योजना कक्ष में सन्नाटा छाया हुआ था।

नौसेना का एक अफ़सर उठा, सीधे दीवार पर लगे नक्शे की ओर गया और बिना किसी भूमिका उन ख़ामोश चौकस अफ़सरों से मुख़ातिब हुआ।

पहले उसने उनके बेड़ों के लिए नौसेना के आदेश, गति और मार्ग का विस्तार किया। फिर अपनी बाईं हथेली को अपनी छड़ी से थपथपाते हुए पूछा, "कोई सवाल?" उसने पूरे कमरे में नज़रें दौड़ाई। सवाल उठाए गए और जवाब दिए गए।

ऑन्डिना के कैप्टन बेंह्योरसन उस कमरे से निकलनेवाले आख़िरी अफ़सर थे। उनके दरवाज़े पर पहुँचते ही, नौसेना अधिकारी ने उन्हें रोककर कहा, "एक मिनट, कैप्टन।" कैप्टन बेंह्योरसन फ़ौरन् सावधान हो गए।

"मेरे पास तुम्हारे लिए विशेष आदेश हैं। तुम इस बेड़े के साथ सिर्फ़ कुछ ही घंटे रहोगे। एस्कोर्ट कमांडरों के सिग्नलों का ध्यान रखना। उनके दिए निर्देशों पर तुम एक गुप्त मंज़िल की ओर बढ़ोगे। गुड लक!" दोनों ने हाथ मिलाये और विदा ली।

एलाइज़: द्वितीय विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्र
मुख़ातिब होना: सम्बोधित करना

एस्कोर्ट: अनुरक्षक
सिग्नल: इशारा, संकेत

इससे पहले कि रात का अँधेरा छंटता, बेड़े ने लंगर उठाया और अपनी मंज़िल की ओर चल पड़ा। अट्ठारह जहाज़ एक दिशा में, और तेईस दूसरी दिशा में। दोनों व्यापारी जहाज़ों के जत्थों को कुछ डिस्ट्रॉयर और अन्य सशस्त्र लड़ाकू जहाज़ संरक्षण दे रहे थे।

फ्रीमैंटल बंदरगाह छोड़ने के बाद, कैप्टन बेंह्योरसन और *ऑन्डिना* के साथ चल रहे रक्षक जहाज़ों के दल ने अपना रुख उत्तर की ओर मोड़ लिया। जैसे ही वे पर्थ बंदरगाह के समीप पहुँचने लगे, वे अपने निर्देशों के मुताबिक बाईं ओर 90^0 पर घूमे और पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया की ओर बढ़ चले।

आठ नवम्बर को भोर हुई, और बिना किसी विशेष घटना के शाम भी ढल गई।

धीरे-धीरे जहाज़ी बेड़े पर युद्धकालीन रात की चादर बिछ गई। रात के दस बजने वाले थे। *ऑन्डिना* पर एक अफ़सर और एक खलासी दूरबीन लगाए रक्षक जहाज़ के निर्देशों के लिए चौकस थे। अचानक एलडिस लैंप की रोशनी ने अँधेरे को पल भर के लिए चीर कर संदेश दिया – अगले संदेश के लिए तैयार रहो। एस्कोर्ट जहाज़ का कमांडर *ऑन्डिना* से संपर्क कर रहा था।

अफ़सर का हाथ दूरबीन पर कस गया। उसने ध्यान से लैंप से आते हुए संदेश देखे। फिर मस्तूल से नीचे उतर, संदेश डीकोड करके कैप्टन बेंह्योरसन को पढ़कर सुना दिया।

"*ऑन्डिना* अब जहाज़ी बेड़ा छोड़कर समुद्री मार्ग 36 लाल पर 12 नॉट की गति से चलेगी। लगभग रात 23.30 घंटों पर आपको नौसेना जहाज़ *वी टी एम एस*

मिसाइलः प्रक्षेपास्त्र
संरक्षणः रक्षा, बचाव
डीकोड करनाः कूट संदेश का अर्थ निकालना

56 मिलेगी। उसके दिए आदेशों पर चलते रहें। संदेश समाप्त। अलविदा और गुड-लक।"

एक बार फिर बेड़ा अँधेरे की चादर में ओझल हो गया।

ऑन्ड्रिना ने धीरे-धीरे बेड़े से बाहर निकलना शुरू किया। तब रात के 22:20 बजे थे।

"उधर कड़ी निगरानी रखो!" अफ़सर ने जहाज़ के सबसे आगे के हिस्से में खड़े प्रहरी को आदेश दिया।

ठीक 23:00 घंटों पर आगे के प्रहरी ने एक धुँधली-सी आकृति रिपोर्ट की। उसी वक़्त रोशनी का एक बिंदु अँधेरे को चीरता दिखाई दिया।

"डॉट-डैश, डॉट-डैश, डॉट-डैश, कौन-सा जहाज़ है? कहाँ जा रहा है?" अजनबी जहाज़ ने सिग्नल किया। *ऑन्ड्रिना* ने अपनी पहचान बताई और पूछा, "तुम कौन हो?"

वापिस जवाब आया, *"वी टी एम एस 56*। इसी रास्ते चलो, स्पीड 12 नॉट।"

कैप्टन बेंह्योरसन ने अपने अफ़सर की ओर देखा। "यह कौन सा जहाज़ है न्यूटसन? क्या तुम जानते हो?"

"जी हाँ सर। मैंने इसका परिचय कमांड निर्देशों में देख लिया था। यह भारतीय नौसेना की समुद्री बारूदी सुरंग विध्वंसक *आर आई एन एस बंगाल* है।" कुछ देर चुप रहने के बाद वह फिर बोला, "यह सिर्फ़ 620 टन की है, सर, चार छोटी तोपों के साथ – एक तीन इंच की, एक 40 मि. मि. और दो 20 मि. मि. कि तोपें। पिछले सप्ताह जब मैं पर्थ में था, तो इसके दो अफ़सरों से मेरी भेंट हुई थी। इसका कमांडर विल्सन विश्व युद्ध से पहले मर्चेन्ट नेवी में था और इस वक्त, उस जहाज़ पर वह अकेला ब्रिटिश अफ़सर है। उसके सहायक अफ़सर, लेफ़्टनेंट मेहरा की तो अभी मूछें भी नहीं आई हैं, सर।"

सुदूरः बहुत दूर
नॉटः समुद्र में गति का माप

अँधेरा घिर आया। कैप्टन बेंह्योरसन जहाज़ के ब्रिज पर चक्कर लगा रहे थे। बार-बार उनकी आँखें अँधेरे को चीर चारों ओर फैले पानी का मुआयना कर रही थीं। अजीब ख़याल उन्हें बेचैन कर रहे थे। 620 टन का भारतीय खिलौना ... सिर्फ़ एक अंग्रेज़ अफ़सर, और वह भी मेरी तरह व्यापारी ... लेफ्ट. मेहरा, इतना तरुण और कच्चा ... और उन्हें इस 15,000 टन के *ऑन्ड्रिना* की रक्षा करनी है जो युद्ध के लिए कीमती तेल व पेट्रोल ले जा रही है। हे भगवान, हम पर दया करना!

कैप्टन बेंह्योरसन ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और अपने पिछले डेक पर लगी चार-इंची तोप को

तनमयता से देखा। और फिर उस पतली, शर्मनाक पानी की धार को, जो *ऑन्ड्रिना* के आगे-आगे चल रही थी। वह *आर आई एन एस बंगाल* थी।

बंगाल के ब्रिज पर लेफ्ट. मेहरा रोजमर्रा के निरीक्षण करते हुए समुद्र को दूरबीन से देख रहे थे। इस घंटे के प्रहरी सब-लेफ़्टनेंट नागसेशन थे।

कंट्रोल रूप में अनुभवी और पुराने क्वार्टरमास्टर, बुद्धिजीवियो ने स्टीयरिंग व्हील संभाल रखा था। जहाज़ के इंजीनियर व पैटी अफ़सर, कुट्टी, रेवोल्यूशन्स की देख-रेख कर रहे थे और टेलिग्राफ़ पर भी नज़र रखे हुए थे।

यह छोटी-सी सुरंग विध्वंसक ऊँची उठती लहरों के बीच शान से चल रही थी। इसे 7000 टन बहुमूल्य तेल और पेट्रोल हज़ारों मील दूर मंजिल पर सुरक्षित पहुँचाना था। गोले-बारूद को शायद दुश्मन लापरवाही से कभी नज़र-अंदाज़ कर भी दे। पर तेल और पेट्रोल? कभी नहीं! ये तो भाप के जहाज़ों और लड़ाकू विमानों के लिए अत्यावश्यक हैं। ये बिना रोक-टोक तभी निकल सकते हैं अगर दुश्मन गहरी नींद सोए रहें।

अचानक, नागसेशन ने ब्रिज की लोहे की रेलिंग कसकर पकड़ ली। उसी वक्त एक प्रहरी ने आवाज़ लगाई, "हरा 21, सर!"

"वहाँ कुछ है सर, हरा 21" नागसेशन की आवाज़ में एक अजीब कँपकपाहट थी।

लेफ्ट. मेहरा ने दाईं ओर देखा, कुछ देर उसी तरफ़ देखते रहे, फिर तुरंत कमांडर विल्सन को आगाह किया।

"दिशा बदलो," कमांडर विल्सन ने आदेश दिया, "स्टारबोर्ड 21।"

"स्टारबोर्ड 21," लेफ्ट. मेहरा ने आदेश का पालन करते हुए कहा।

"स्टारबोर्ड 21 है, सर," दिशा सूचक पहिए पर बैठे गीगा ने कहा।

स्टारबोर्डः जहाज़ का दाहिना भाग जब कोई उसक सिरे की ओर मुँह करके खड़ा हो

पानी को चीरती हुई, *बंगाल* एक चीते की तरह लहरों पर आगे लपकी। उसके दोनों तरफ़ झाग की पहाड़ियाँ उछलने लगीं। इंजन की गति और स्पंदन से कांपती हुई जल्द ही वह उस जगह पहुँच गई। लेफ्ट. मेहरा की दुश्चिंता सच ही निकली – वहाँ समुद्र की सतह पर तैर रहा था किसी टूटे जहाज़ का अवशेष, ज़रा-सा मलबा, तेल, और ख़ामोश उठती लहरें।

"बेचारे!" लेफ्ट. मेहरा ने कहा।

बंगाल ने दिशा बदली और *ऑन्ड्रिना* के बराबर आ गई। लाउडस्पीकर से आदेश दिया गया, "अगले 30 मिनट, मार्ग 15 लाल, 20 हरा, चार बार लाल, तीन बार हरा। संदेश समाप्त। संदेश पुनः दोहराएँ।"

यह संदेश *ऑन्ड्रिना* को टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता चलने को कह रहा था, जो आमतौर पर पनडुब्बियों से बचने के लिए किया जाता है।

जब 9 नवम्बर का सूरज उगा, *ऑन्ड्रिना* के अफ़सर और खलासी आश्चर्यचकित इस भारतीय नौके को देख रह थे। उसका पेंदा या हल केवल इतना बड़ा था कि उसमें मुम्बई या मेलबर्न की छोटी मोटर-बोट समा जाए। उसके सामने और पीछे के डेकों पर तोपें थीं। पर क्या तोपें थी! जैसे क्रिसमस पर बच्चों की पिस्तौलें। *बंगाल* का मुख्य हथियार एक तीन-इंची तोप थी, और साथ में एक बॉफ्फ़र तथा दो ऑर्लिकॉन्स तोपें।

जहाँ समुद्री लहरें *ऑन्ड्रिना* को हौले-हौले थपथपा रही थीं, वही लहरें *बंगाल* को सूखे नारियल की तरह इधर-उधर पटक रही थीं।

कैप्टन बेंह्योरसन का विश्वास तो तभी हिल गया था जब न्यूटसन ने उस रात *बंगाल* के बारे में बताया था। पर जब दिन की रोशनी में उसे देखा तो वे अवाक रह गए। वे अपने पास खड़े अफ़सर की तरफ मुड़े और हवा में अपने हाथ खड़े कर दिएः "शानदार है!"

उधर, *बंगाल* पर तैनात लोगों में से किसी ने भी कैप्टन बेंह्योरसन और उनकी परेशानियों की ओर ध्यान नहीं दिया। कमांडर विल्सन ब्रिज पर थे, किसी भी विपदा के लिए तैयार। बाकी अफ़सर और आदमी भी जहाज़ पर अपने-अपने कामों में व्यस्त थे। सर्जन लेफ्ट. मेनन और इंजीनियर लेफ्ट. हसन रेलिंग पकड़े जहाज़ से नीचे देख रहे थे और एक गंभीर वार्तालाप में डूबे थे। तोपों

की देखभाल के लिए अफ़सर लेफ्ट. रणबीर तोपचियों को रोज़ का अभ्यास करवा रहे थे।

जो ड्यूटी पर नहीं थे वे आराम कर रहे थे। कुछ अपनी फटी वर्दियाँ सिल रहे थे, और कुछ अपने-अपने घर चिट्ठियाँ लिख रहे थे।

बादलों के बीच झूलते ऊँचे मस्तूलों पर खड़े चौकस प्रहरी अपनी निगरानी और तेज़ कर रहे थे। रेडियो अफ़सर ने कानों में ईअरफ़ोन लगाए और अपनी मशीनों पर निगरानी और कड़ी की। उधर, शक्तिशाली टेलिस्कोप लड़ाकू विमानों के लिए आसमान छान रहे थे। कंट्रोल रूम के पास अपने कमरे में बैठा वायरलैस अफ़सर रेडियो पर आती खड़-खड़ यूँ सुन रहा था मानों घर के टेलिफोन पर अपनी मंगेतर की आवाज़ हो।

कमांडर विल्सन के सिवा इस नौका पर सभी लोग

वायरलैसः बेतार प्रसारण, बिना तार के तार या संदेश भेजना

भारतीय थे, अलग-अलग समुदायों से, अलग-अलग शहरों से। पर कई महीनें एक परिवार की तरह इकट्ठे रहने के कारण, उन सब में आत्म-सम्मान, गौरव और कर्त्तव्य की एक प्रबल भावना थी जो उन्हें बाँधे हुए थी। *ऑन्डिना* से उत्सुक आँखें *बंगाल* की हर गतिविधि और उस पर तालमेल के साथ किए जानेवाले हर काम पर टिकी थीं। वे चिंतित थीं कि इन आदमियों की मदद और पराक्रम पर वे कहाँ तक भरोसा कर सकते थे।

नौ और 10 नवम्बर बिना किसी हादसे के गुज़रे। वे सभी धीरे-धीरे सुरक्षित महसूस करने लगे थे, और यह अहसास 11 तारीख की शाम तक भी उनके साथ रहा। *ऑन्डिना* पर काफ़ी शान्ति थी और सभी उत्साहित लग रहे थे। जिस

आसानी से पिछले तीन दिन गुज़रे थे, यह अंदाज़ा लगाया जा सकता था कि दुश्मन शायद आस-पास नहीं, कहीं और ही घात लगाए था।

अचानक, *बंगाल* से आए एक दबे धमाके ने शाँति का भ्रम तोड़ दिया। हवा के विस्फ़ोट के साथ एक छोटी-सी आग की लपट आसमान की ओर लपकी और चिंगारियाँ बरसाती हुई पानी में आ गिरी। फ़ौरन् चौकस हो, कैप्टन बेंह्योरसन *बंगाल* को बाज़ की तरह देखने लगे।

शाम 4:40 पर *बंगाल* के वायरलैस ने अमरीकि क्रूज़र लड़ाकू जहाज़ *टोलेडो* से संदेश पाया कि दो जापानी क्रूज़र युद्धपोत *बंगाल* के आस-पास मंडरा रहे थे। अगले ही पल पूरी नौका पर आदेश गूँज उठा – "हमले के लिए तैयार!"

सभी आदमी फ़ौरन् दौड़कर अपनी-अपनी जगह जा पहुँचे। गोलन्दाज़ी अफ़सर लेफ्ट. रणबीर ने भारतीय नौसेना के तीन जाने-माने तोपची, धीर सिंह, बापू करमाकर और नेलुन्दुर पिल्लै को तीनों महत्त्वपूर्ण तोपों पर तैनात कर दिया। रेडार दोहरी नज़र रखे था।

आदेशानुसार, सभी आदमी नहाकर कच्छे-बनियान में अपनी-अपनी जगह लौटे, ताकि यदि घायल हो जाएँ तो घाव में सड़न न लगे, और युद्ध में फ़ालतू कपड़ों का बोझ न हो। सर्जन लेफ्ट. मेनन ने सबको सल्फ़ा की गोलियाँ बाँट दी ताकि चोटों व घावों में मवाद न पड़े। शाम 5 बजे से पहले हर कोई रात का खाना खा चुका था और अब वे सब चुपचाप बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे कि आगे क्या होगा।

शाम के ठीक 5 बजे, *बंगाल* के रेडियो अफ़सर ने एक बातचीत पकड़ी जो किसी अनजान कोड में थी।

कोड समझ नहीं आ रहा था। क्योंकि उनके बोलने का लहज़ा ब्रिट्रिश से फ़र्क था, तो यह अर्थ लगाया गया कि दुश्मन के ये दो जहाज़ उनसे कुछ ही दूरी पर थे।

बंगाल पर अनिश्चिय और हलचल का माहौल था। लेकिन महीनों के अनुशासन और नौसेना अभ्यास से इन नौसैनिकों में इतना आत्म-संयम आ गया था कि वे फिर भी शांति से बात कर सकते थे।

शाम के 5:35 बजे भी इतना उजाला था कि आसमान में फ़्लेयर द्वारा ध्यान आकर्षित नहीं किया जा सकता था। सिग्नल लैंप की चमक इस रोशनी में भी दिखाई दे जाएगी। कमांडर विल्सन ने सब-लेफ्टनेंट नागसेशन को आदेश दिया कि पीछे जाएं और एक फ़्लेयर हवा में छोड़ दें।

ऑन्डिना के ब्रिज से कैप्टन बेंह्योरसन ने संकेत देखा और आदेश दिया, “हमले के लिए तैयार रहो!”

कैप्टन की भारी आवाज़ लहरों के ऊपर तैर *बंगाल* पर भी सुनाई दी। और ठीक उसी समय इंजन रूम में लगे आवाज़ पकड़ने वाले साउंड डिटेक्टर ने किसी जहाज़ के प्रोपैलर की आवाज़ पकड़ी। इंजीनियर लेफ्ट. हसन ने तुरंत कमांडर विल्सन को सूचना दी। *बंगाल* ने एक और फ़्लेयर छोड़ा – "हमारे पीछे चलें।"

"30 लाल," कमांडर विल्सन ने क्वार्टर मास्टर को हुक्म दिया। *ऑन्डिना बंगाल* के पीछे-पीछे चल दी।

एक पल बाद, लेफ्ट. इंजीनियर हसन ने ब्रिज को सूचना दीः "सर, अब एक नहीं, दो प्रोपैलरों की आवाज़ सुनाई दे रही है, और मेरे हिसाब से दुश्मन 10 केबल दूर है। दोनों हमारी ही ओर आ रहे हैं, सर।"

"शुक्रिया हसन," कमांडर विल्सन बोले। उन्होंने लेफ्ट. मेहरा और लेफ्ट. हीफ़ को नक्शोंवाले कमरे में मंत्रणा के लिए बुलाया। एक 620 टन की बारूदीसुरंग विध्वंसक का अस्त्र-शस्त्र से लदे दो क्रूज़र युद्धपोतों से मुकाबला करना – जो कि उससे दस गुणा बड़े और उससे बीस गुणा विध्वंसक शक्ति रखते हों – यह तो सरासर ख़ुदकुशी थी। लेकिन, अगर दुश्मनी जहाज़ों ने चुनौती दी, तो कमांडर और उनके अफ़सर एकमत थे – वे आख़िरी दम और आख़िरी गोली तक लड़ेंगे।

मंत्रणा कुछ ही मिनट चली। सिग्नल अफ़सर सखपाल को बुलाकर कमांडर विल्सन ने *ऑन्डिना* के लिए संदेश भिजवाया। पीछे के डेक से सखपाल ने एक छोटी बैटरी वाली टॉर्च से संदेश भेजा।

"कमांडर बेंह्योरसन को कमांडर विल्सन का सलाम। यहाँ से फ़ौरन् निकल जाएँ। अपनी पूरी गति से पूर्व की ओर बढ़ें। *बंगाल* दुश्मन को जितनी देर हो सके उलझाए रखेगी। यदि हम हारे या क्षतिग्रस्त हुए, तो आपको वायरलैस से सूचित करेंगे। फ़ौरन् हमसे दूरी बढ़ाएँ और

ऑन्डिना को सुरक्षित जगह ले जाएँ। शुभकामना सहित अलविदा। संदेश समझें हों तो इशारा करें।"

उधर *ऑन्डिना* पर, सिग्नल करने वाला अपनी टॉर्च तैयार लिए खड़ा था। कैप्टन बेंह्योरसन ने उससे टॉर्च छीनी और वापस सिग्नल कियाः "डॉट, डॉट, डॉट, डॉट, डॉट, संदेश समझ नहीं आया।"

सखपाल ने एक तेज़ टॉर्च ली और पूरा संदेश दोबारा भेजा। दोबारा वही ज़वाब वापस आया। तीसरी बार सखपाल ने धीरे-धीरे, बेहद सावधानी से संदेश भेजा। कैप्टन बेंह्योरसन ने भी धीरे-धीरे, बेहद सावधानी से ज़वाब भेजाः "डॉट, डॉट, डॉट, डॉट, डॉट।"

सखपाल हैरान था। लेकिन उसके साथ खड़े लेफ्ट. मेहरा ठहाका मार कर हँस पड़े। "महान सैनिक, जीत तुम्हारी हो! हम-तुम मिलकर दुश्मन को धूल में मिला देंगे!"

लेफ्ट. मेहरा कमांडर विल्सन को यह खबर देने ऊपर दौड़े, "सर, *ऑन्डिना* भागने का आदेश मानने से इंकार करती है। कैप्टन बेंह्योरसन बार-बार सिग्नल कर रहे हैं कि उन्हें हमारा संदेश ठीक से समझ नहीं आ रहा।"

कमांडर विल्सन ने खुद टॉर्च ली और कैप्टन बेंह्योरसन को सिग्नल किया, "शाबाश! अपनी गति कम करें और सात केबल की दूरी पर रहें।"

ऑन्डिना ने तुरंत इस आदेश का पालन किया। "यह संदेश उन्होंने देख भी लिया है, और समझ भी लिया है," लेफ्ट. मेहरा ने हँस कर कहा।

रात 11.12 बज़े रेडार पर काफ़ी हलचल दिखाई दी। "दुश्मनी जहाज़ हमारी ओर बढ़ रहे हैं, सर,"

लेफ्ट. मेहरा ने ब्रिज को संदेश दिया। अब रेडार के पर्दे पर दोनों जहाज़ों की लकीरें साफ़ दिखाई दे रही थीं। लेफ्ट. मेहरा ने दो मिनट देखा और तेज़ सीटी बजाई। वे दौड़कर कमांडर के पास गए और सैल्यूट करके बोले, "दो जापानी क्रूज़र युद्धपोत हमारी तरफ़ आ रहे हैं, सर, बस 8 केबल की दूरी पर हैं।"

"क्या तुम उन्हें पहचान सकते हो?"

"हाँ सर, *होकोकु मारू* और *कियोसुमी मारु*।"

कमांडर विल्सन कुछ सोचकर बोले, *"होकोकु मारू ... 10,000 टन और कियोसुमी मारू ... 8,500 टन?"*

"और सर," लेफ़्ट मेहरा ने कहा, "दोनों पर आठ छह इंच की तोपें हैं।"

"अगर इन में से एक भी छह-इंची तोप का गोला निशाने पर पड़ा, तो *बंगाल ...*"

"हाँ सर, पर तोप अलग चीज़ है और निशाना अलग, और किस्मत कुछ और ही।"

"तो देखते है किस की किस्मत ज़्यादा तेज़ है।"

उसी वक्त एक आँखें चौंधिया देने वाला फ्लैश और गरजदार विस्फोट हुआ। दुश्मन ने हमला बोल दिया था।

"बहुत ख़ूब, बेटा! बस तू ऐसे ही चलता रह, " लेफ्ट. मेहरा ने दबे होंठ कहा और दूरबीन उठाकर देखने लगे कि अगला विस्फोट कहाँ से आने वाला था।

दुश्मन अभी इतना क़रीब नहीं था कि *बंगाल* अपनी छोटी तोपों से साफ़ निशाना लगा पाती। इसलिए वह आगे बढ़ती रही।

दोनों दुश्मनी जहाज़ों ने *बंगाल* और *ऑन्ड्रिना* पर एक साथ हमला बोल दिया। *ऑन्ड्रिना* के पहले जवाबी हमले की आवाज़ गूंज उठी। दुश्मन को निशाने की सीमा में लाने के लिए *बंगाल* तेज़ी से उनकी ओर बढ़ रही थी। उसके इंजीनियर अधिकतम गति के लिए भाप बढ़ाते रहे, जब तक ऐसा न लगने लगा कि उसकी भाप की टंकियाँ फट ही जाएँगी। लहरों को चीरती हुई *बंगाल* खुद

एक तोप का गोला लग रही थी।

धीर सिंह, कर्माकर और पिल्लै – भारतीय नौसेना में अपनी निशानेबाज़ी के लिए मशहूर –ध्यान से निशाना साधनेवाली दूरबीन में देख रहे थे, मानो किसी स्टूडियो में कैमरा फ़ोकस कर रहे हों।

जैसे ही *बंगाल* निशाना लगाने लायक दूरी पर पहुँची, उसकी 12 पाउण्ड की तोप आग उगलने लगी। साथ ही उसकी बाकी दो तोपें भी गोले बरसाने लगीं। *होकोकु मारू* के पिछले डेक पर गोला ऐन निशाने पर लगा।

"शाबाश जवानों!" लेफ्ट. रणबीर चिल्लाए, "दिखा दो उन्हें!" अगले ही गोले ने *होकोकु मारू* के पीछे का मस्तूल ध्वस्त कर दिया।

"पूरे दम पर आगे बढ़ो!" कमांडर विल्सन

चिल्लाए। टेलिग्राफ़ बजाते हुए नागसेशन ने हामी भरी, "पूरे दम पर आगे हैं, सर।"

"वहीं थामे रहो!"

"वहीं थामे हैं, सर," कंट्रोल रूम से गीगा ने हामी भरी। अगले ही पल *बंगाल* दोनों जापानी जहाज़ों के बीचों-बीच पहुँच गई, और तब उसके दाएँ और बाएँ तरफ की तोपों ने दोनों युद्धपोतों पर एक साथ हमला बोल दिया।

कैप्टन बेंह्योरसन इस हैरतअंगेज़ कारनामे से बिल्कुल बौखला गए। "द डैम्ड फूल्ज़!" वे चिल्लाए।

लेकिन इस पैंतरे से *बंगाल* ने दुश्मन को असमंजस में डाल दिया था। यदि दोनों युद्धपोतों में से एक भी *बंगाल* पर फ़ायर करता, तो उसका गोला दूसरी ओर अपने ही साथी के जहाज़ को तबाह करता। दोनों युद्धपोतों के तोपची हैरान-पेरशान थे और एक भी गोला न दाग

सके। दोनों के कैप्टन भौंचक्के थे, कोई फ़ैसला नहीं ले पा रहे थे। उन्हीं कुछ पलों में *बंगाल* ने दोनों दुश्मनों को बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया।

पहले *कियोसुमी मारू* ने होश सम्भाला। उसने बाईं ओर मुड़ना शुरू किया। उसकी योजना समझ *होकोकु मारू* ने भी धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरू किया।

बंगाल की पैंतरेबाज़ी में उलझे हुए जापानी *ऑन्डिना* को भूल ही गए थे। जब बिजली की तरह एक गोले ने *कियोसुमी मारू* का प्रोपैलर छितरा-छितरा कर दिया, तब उसके कैप्टन को होश आया। *बंगाल* से बदला लेना छोड़, अब वह *ऑन्डिना* की तरफ तेज़ी से बढ़ी। *बंगाल* मुड़ी, *कियोसुमी मारू* का पीछा किया और उस पर गोलों की बौछार की। *कियोसुमी मारू* का दिशा नियंत्रक रडर ध्वस्त हो गया। जवाब में *कियोसुमी मारू* के तोपों ने *ऑन्डिना* पर दनादन गोले दागे। जल्द ही *ऑन्डिना*

धू-धू कर जलने लगी और उसके तेल और पेट्रोल के टैंकों से आग की लपटें रात के अँधेरे को चीरती हुई आसमान छूने लगीं।

बंगाल ने *ऑन्ड्रिना* को वायरलैस किया, "यहाँ से निकल भागो!" और फिर कोड में गुप्त संदेश भेजा, "तुम्हारी मंज़िल है डिएगो गार्सिया, देशान्तर 75^0 पूर्व, अक्षांश 6^0 दक्षिण। गुड लक!"

जलती हुई *ऑन्ड्रिना* धीरे-धीरे मुड़ी। कैप्टन बेंह्योरसन ने रेडियो अफ़सर को आदेश दिया कि नौसेना मुख्यालय को कोड में गुप्त संदेश भेजें। संदेश में *ऑन्ड्रिना* की पहचान बताने के बाद यह कहा गयाः "मेरे जहाज़ पर 7,000 टन तेल व पेट्रोल है। दो जापानी युद्धपोतों के साथ हमले में मेरे जहाज़ पर आग लग गई है। मैं यहाँ से निकलने और अपने जहाज़ को बचाने की कोशिश कर रहा हूँ। भारतीय नौसेना की जाँबाज़ बारूदीसुरंग

विध्वंसक, *बंगाल* दोनों जापानी युद्धपोतों से अकेले मुकाबला कर रही हैं। हम इस वक्त देशान्तर 72^0 40' पूर्व, अक्षांश 19^0 45' दक्षिण पर हैं।"

ऑन्ड्रिना को तेज़ी से निकल जाते देख, *बंगाल* ने एक आख़िरी हमले का फ़ैसला किया। *बंगाल* ने काफ़ी बड़ी चोटें खाईं थी। उसके कई नाविक डेक पर घायल पड़े थे और स्ट्रेचर पर नीचे लिए जाने का इंतज़ार कर रहे थे। उन्हें देख बाकी सभी में आत्म-बलिदान की भावना और भी प्रबल हो उठी।

लेफ्ट. मेहरा कमांडर विल्सन की ओर मुड़े और बोले, "सर, आपने व्यापारी जहाज़ों पर काम किया है। ये दोनों जापानी जहाज़ व्यापारी जहाज़ हैं। आप ऐसे जहाज़ के कैप्टन होते, तो अपना अस्लाबारूद कहाँ रखतें?"

कमांडर विल्सन लेफ्ट. मेहरा के सवाल से दंग रह गए। उसके कंधे पर हाथ रखा और बोले, "शाबाश बेटे! यह बात मुझे क्यों नहीं सूझी? यदि मैं *होकोकु मारू* का कैप्टन होता, तो निश्चित ही मैं अपना अस्लाबारूद इंजन रूम से दूर, सबसे नीचे 5 नम्बर होल्ड में रखता।"

"शुक्रिया सर! तो 5 नम्बर होल्ड ही है!" और यह कहते हुए लेफ्ट. मेहरा लेफ्ट. रणबीर को ढूँढने दौड़े। कमांडर विल्सन ने घड़ी की ओर देखा और आश्चर्य से उनकी आँखें फटी रह गईं। आक्रमण शुरू हुए केवल बीस मिनट हुए थे! कमांडर विल्सन ने घड़ी को नज़र भर देखा और फिर धीमे से कहा, "20 हरा!"

"20 हरा ही है, सर," गीगा ने वापस आवाज़ दी। इंजन रूम का टेलिग्राफ़ बजा – आधी स्पीड

दाएं से, पूरी स्पीड बाएँ से।

बंगाल धीरे-धीरे मुड़ने लगी।

होकोकु मारू के कैप्टन ने *बंगाल* को अपनी ओर मुड़ते देखा और अपने सभी तोपचियों को *बंगाल* पर निशाना साधने का हुक्म दिया। "ठीक से निशाना लगाओ और जब वह पास आ जाए, तो उड़ा दो उसे – ऐसे!" उसने चुटकी बजाकर दिखाया।

बंगाल ने अपना मुँह *होकोकु मारू* की लंबाई की तरफ़ रखा हुआ था, जिससे जापानी उस पर आसानी से निशाना नहीं लगा पा रहे थे। *बंगाल* पर निशाना लगाने के लिए जापानी कैप्टन को अपना जहाज़ मजबूरन मोड़ना पड़ा। और जैसे ही वह मुड़ी, *बंगाल* की सभी तोपें एक साथ बोलीं, और उनके आक्रोशात्मक धमाके ने उसके छोटे आकार को झूठा साबित कर दिया। *होकोकु*

मारू पानी से ऊपर उछली, खुद को संतुलित करने की कोशिश की, लेकिन उलट गई। नम्बर 5 होल्ड पर सीधा निशाना लगा था।

नेलुन्दुर पिल्लै की पीठ ठोकते हुए लेफ्ट. रणबीर खुशी से चिल्लाने लगे, "क्या निशाना है, पिल्लै! कमाल कर दिया!" *बंगाल* से विजयघोष के नारे हवा में गूँज उठे। लेकिन इस शोरगुल में अचानक कमांडर विल्सन यह देख कर स्तब्ध रह गए कि *कियोसुमी मारू ऑन्डिना* को पूरी तरह ध्वस्त करने के लिए उसका पीछा कर रही थी। देखते ही देखते, गोलों की बौछार ने *ऑन्डिना* पर बड़े-बड़े घाव खोल दिए। एक हत्यारी गोली से वीर कैप्टन बेंह्योरसन भी मारे गए।

जल्द ही, *ऑन्डिना* सिर्फ़ एक जलती हुई लोहे की ढेर बन कर रह गई। बचे हुए अफ़सरों और नाविकों ने जहाज़ छोड़ने का फ़ैसला किया। लाइफ़बोटें समुद्र में उतारी जाने लगीं।

लेकिन *ऑन्डिना* को पूरी तरह डुबो देने के इरादे से *कियोसुमी मारू* ने पानी में टॉरपीडो छोड़ी। उसका निशाना चूक गया। दूसरा टॉरपीडो भी रास्ते से भटक गया। अब बुज़दिल जापानियों ने अपनी बंदूकें लाइफ़बोटों में बैठे निहत्थे आदमियों पर तान दीं।

इतने में ही एक ज़ोरदार विस्फ़ोट सुनाई दिया। तेज़ी से डूबती हुई *होकोकु मारू* मौत के मुँह जा रही थी। *कियोसुमी मारू* उसको बचाने के लिए दौड़ी, पर वह इतनी जल्दी डूब गई कि लाइफ़बोट उतारने का भी वक़्त न मिला।

टॉरपीडोः जहाज़ ध्वस्त करने के लिए पानी में छोड़े जाने वाला गोला

कियोसुमी मारू के कैप्टन ने *जब बंगाल* को किसी क्रोधित शेरनी की तरह अपनी ओर लपकते देखा, तो उसने उत्तर-पूर्व दिशा में भागने का फ़ैसला किया। जान बचा कर भागते हुए उसने *ऑन्डिना* की ओर एक आख़िरी टॉरपीडो दागा। एक बार फिर उसका निशाना चूक गया।

बंगाल ने अपना ध्यान अब *ऑन्डिना* की ओर किया। कमांडर विल्सन और उनके साथी *ऑन्डिना* को बचाने के लिए संकल्पबद्ध थे।

बारूदीसुरंग विध्वंसक को अपनी ओर आते देख लाइफ़बोटों में बैठे आदमियों में नई आशा जाग उठी। *बंगाल* का एक दल तबाही रोकने के लिए जलती हुई *ऑन्डिना* पर उतरा।

कई घंटों बाद, आग पर काबू पा लिया गया। आख़िरी लपटों के बुझते-बुझते, 12 नवम्बर का सूरज एक नई सुबह लेकर आया।

इतनी क्षति के बाद भी *बंगाल* की ताकत और जोश बरकरार थे। उसके 110 में से 50 नाविक इस युद्ध में घायल हुए थे, लेकिन एक भी जान नहीं गई थी!

बंगाल ने फिर से *ऑन्डिना* के प्रहरी होने का दायित्व संभाल लिया। इस छोटी-सी बारूदीसुरंग विध्वसंक की तोप में अभी भी पाँच गोले बाकी थे, जिनके प्रयोग की नौबत तक नहीं आई थी।

कहानी पढ़ो, कठिन शब्दों के अर्थ ढूढों,
समझो और लिखो।

अगर तुम आर आई एन एस बंगाल
के कैप्टन होते तो क्या करते?
कहानी की घटनाओं को
उनके समय के अनुसार दर्शाओ।
पहले घंटे से चौबीस घंटे तक
क्या-क्या हुआ?

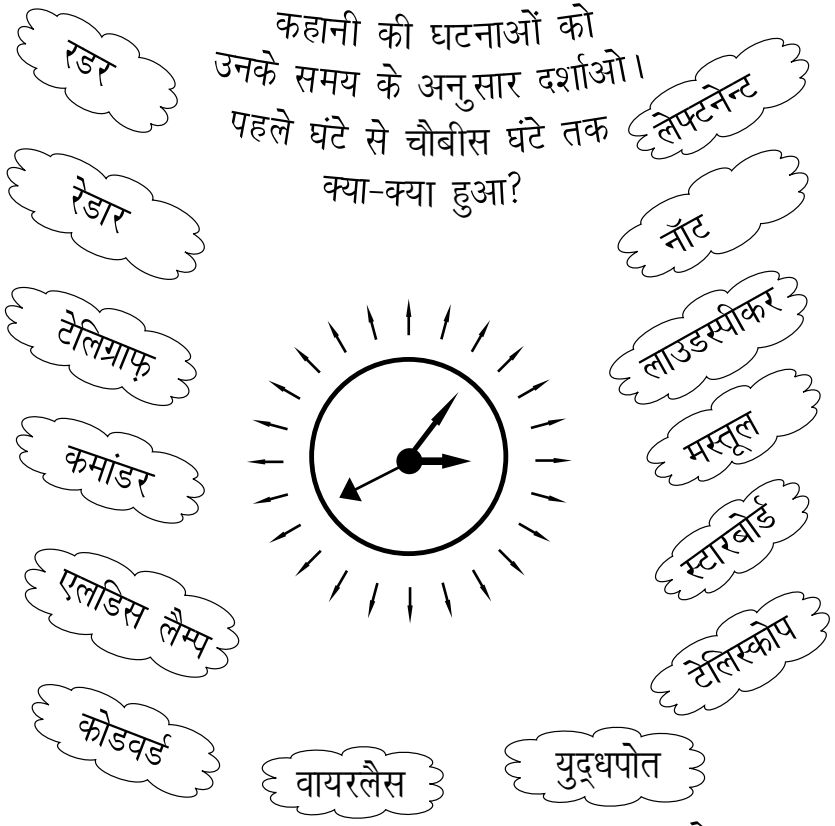

ऊपर दिए गए सभी शब्दों की योजना बनाओ
कि इनकी ज़रूरत कब और कहाँ पड़ती है।

कथा कहती है कहानी?

छोटी-सी "बंगाल" ने क्या खूब
मुकाबला किया जापानी जहाज़ों
का! दुश्मन को, और दुनिया को,
दिखा दिया कि सिर्फ़ छोटे होने से
किसी की क्षमता छोटी नहीं होती।

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।

इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

युवकथा की अन्य दिलचस्प किताबें!

छोटी-सी "बंगाल" ने क्या खूब मुकाबला किया जापानी जहाज़ों का! दिखा दिया दुश्मन को, और दुनिया को, कि सिर्फ़ छोटे होने से किसी की क्षमता छोटी नहीं होती।

छोटे-बड़े बच्चों के लिए

एक कथा की किताब

ISBN 978-81-89934-07-1

9 788189 934071

www.katha.org

रु. 65/-